22 शोधार्थियों को दी गई पीएचडी, 25 हजार पुस्तकें बच्चों पर केंद्रित

देवपुत्र के संपादक कृष्णकुमार अष्ठाना के मार्गदर्शन में संचालित है संचालन

देशभर के शोधार्थी यहां रहकर करते हैं शोध कार्य

पांच राज्यों के विवि ने पीएचडी के लिए दी मान्यता

बाल दिवस 14 नवंबर के मौके पर विशेष

इंदौर में बाल साहित्य पर शोध का सर्वोत्कृष्ट केंद्र

बच्चों को हम आखिर क्या पढ़ाएं, बच्चों के लिए खिलौने किस तरह के हों, ताकि उनका मनोरंजन भी हो। पढ़ाई में भी खिलौने अहम भूमिका निभाएं, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए स्कूली पाठ्यक्रम क्या हो, किस तरह की पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की जाएं, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो पाए। सभ्यता-संस्कृति से बाल पीढ़ी को किस तरह आसानी से रूबरू कराया जाए, बच्चों को मनोविज्ञान पर कौन-सी वस्तु या तरीके अधिक प्रभाव डालते हैं। ये ऐसे विषय हैं, जो इंदौर के भारतीय बाल साहित्य शोध केंद्र में सामान्यतः आते रहते हैं। इन विषयों से संबंधित बातों पर देशभर के शोधार्थी इंदौर से मदद लेते हैं। इन विषयों की मदद से एमफिल, पीएचडी की डिग्री भी विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की जा रही है।

विशेष संवाददाता

इंदौर। इंदौर के संवाद नगर में बाल पत्रिका देवपुत्र निकलती है। इसके संपादक शहर के वरिष्ठ पत्रकार कृष्णकुमार अष्ठाना ने प्रबंध संपादक एवं शोधार्थी रहे डॉ. विकास दवे के सहयोग से पिछले दशक में यहां भारतीय बाल साहित्य का नन्हा पौधा रोपा था, जो अब बाल साहित्य पर शोध के मामले में वटवृक्ष बन चुका है। वैसे तो बच्चों के मामले में देश में शोध कम होते हैं, लेकिन इंदौर में इस समय इस मामले में सर्वाधिक शोध हो रहे हैं। इस शोध केंद्र में पांच राज्यों के दस विश्वविद्यालय के शोधार्थी जुड़े हुए हैं, जो इंदौर आते हैं। यहां ठहरकर सैकड़ों पुस्तकों, पांडुलिपियों व अन्य बाल सामग्री से अध्ययन सामग्री लेते हैं। इससे इनका शोध कार्य आसान हो रहा है। इस केंद्र में अब तक बच्चों से संबंधित करीब पच्चीस हजार पुस्तकें संग्रहित हो चुकी हैं। सिर्फ बच्चों की एक ही स्थान पर इतनी पुस्तकें भी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती हैं। इंदौर के इस अनोखे बाल साहित्य शोध संस्थान से इस समय देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर, भावनगर विश्वविद्यालय गुजरात, भागलपुर हिंदी विश्वविद्यालय बिहार, जालंधर विश्वविद्यालय पंजाब आदि प्रमुख रूप से मदद ले रहे हैं। अभ तक इंदौर के इस केंद्र की मदद से बाल साहित्य से संबंधित विषयों पर शोध करने वाले देशभर के 22 लोगों को विश्वविद्यालयों ने बच्चों के साहित्य के डॉक्टर यानी पीएचडी उपाधि प्रदान की है। बच्चों के लिए काम करने, बच्चों के हित की ओर ध्यान देने, बच्चों में अच्छे कार्य के प्रति रुचि जगाने, बच्चों का मनोविज्ञान समझने के लिए इस तरह का सर्वाधिक कार्य इंदौर में ही हो रहा है।

एक अनूठा संग्रहालय बच्चों के लिए सरस्वती बाल फिल्म संग्रहालय

भारत में बच्चों के लिए फिल्मों का निर्माण कम ही हुआ है। मजबूरी में नन्हें बच्चे मनोरंजन की चाह में बड़ों के लिए बनाई गई फिल्मों को देखकर ही अपना काम चलाते है। दृश्य माध्यम के प्रति बच्चों की आसक्ति को ध्यान में रखते हुए देवपुत्र परिसर में ही 350 से अधिक बाल फिल्मों का एक संग्रहालय बनाया गया है। इस संग्रहालय में चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी ऑफ इंडिया की सभी हिन्दी फिल्मों के अतिरिक्त समय-समय पर बनी रोचक व्यावसायिक बाल फिल्में भी इस संग्रह में उपलब्ध है। विदेशों में बनने वाली कई अच्छी एनिमेशन बाल फिल्मों का संग्रह भी किया गया है। इन फिल्मों के बड़े परदे पर प्रदर्शन हेतु संस्थान के पास फिल्म प्रोजेक्टर सेट भी उपलब्ध है। समय-समय पर देवपुत्र परिसर में एवं विद्यालयों में जाकर इनके प्रदर्शन की निःशुल्क व्यवस्था की जाती है।

दृष्टिहीन भी पीछे नहीं

इंदौर की दृष्टिहीन मंजू पटेल ने भी भारतीय बाल साहित्य शोध केंद्र की मदद से पीएचडी प्राप्त की है। मंजु पटेल अब डॉक्टर मंजु पटेल हो गई हैं। सौभाग्य से उन्हें सरकारी नौकरी भी मिली व अब वे देवास जिले के कॉलेज में पढ़ाई करा रही हैं।

बाल साहित्य पर पाई पीएचडी

- विकास दवे, इंदौर
- सुषमा यादव, इंदौर
- शक्ति सकल्ले, इंदौर
- मालती महावर, भोपाल
- कीर्ति खाण्डवे, इंदौर
- सचिन मिश्रा, अमरावती
- आशीष सकरे, खरगोन
- चेतना दुबे, इंदौर
- सचिन मिश्रा, उज्जैन
- स्मिता रावत, आलीराजपुर
- ममता गोखे, इंदौर
- लक्की पाटीदार, इंदौर
- विद्या रोमडे, इंदौर
- कामना गुप्ता, राजगढ़
- वर्षा बहन पाटेनरी, भावनगर
- राखी शर्मा, धामनोद
- मंजरी अग्रवाल, इंदौर
- भारती रजक, जबलपुर
- संजय कुमार ठाकुर, भागलपुर
- अनिता पाटीदार, इंदौर
- रामकुमार शुक्ल, शिवपुरी
- आराधना सिंह, इंदौर
- सोनाली निनाम, मेघनगर
- एकता गायकवाड़, इंदौर
- मोतीलाल भोरगा
- देवेश कुमार त्यागी, इंदौर
- मंजू पटेल, इंदौर
- संतोष एस्के, धार
- अर्चना बघेल, महू
- कामना कनोजिया, इलाहाबाद

बाल साहित्य के प्रति हम दशकों से काम कर रहे है। उक्त शोध केंद्र के माध्यम से हमने बच्चों का मानस बदलने, उन्हें अच्छा साहित्य, पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने का प्रयास किया है।

-कृष्णकुमार अष्ठाना,
अधिष्ठाता बाल साहित्य शोध केंद्र

अष्ठानाजी के मार्गदर्शन में उक्त शोध केंद्र में बाल साहित्य बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में करीब 25 हजार किताबें सिर्फ बच्चों की है। यह संख्या देशभर में सर्वाधिक है। सैकड़ों लोग यहां की मदद से शोध कर रहे है। 22 को पीएचडी मिल चुकी है।

- डॉ. विकास दवे,
मार्गदर्शक बाल साहित्य शोध केंद्र

बच्चों के लिए शोध केंद्र के माध्यम से कार्य करने वाला यह केंद्र देशभर में अजूबा है। बच्चों के लिए अच्छी पुस्तकें, चित्र, कहानियां, कविताएं व अन्य सामग्री का यहां संग्रहण वाकई प्रशंसनीय है। केंद्र संस्थापक का कार्य भी उल्लेखनीय है।

-डॉ. रीता जैन,
प्राचार्य अहिल्या कन्या महाविद्यालय

बच्चों की किताबें, कॉमिक्स एक ओर बंद हो रहे है, वहीं दूसरी ओर इंदौर जैसे स्थान पर बच्चों की पत्रिकाएं निकालने के अलावा ऐसा साहित्य शोध केंद्र चलाना वाकई काबिले-तारीफ है। बच्चों के साहित्य पर शोध कर पीएचडी वाकई बड़ा कार्य है।

- शशिकांत गुबरेले,
प्राचार्य शासकीय मालव कन्या हाईस्कूल

इंदौर के बाल साहित्य शोध केंद्र का कार्य वाकई काबिले-तारीफ है, जिसने बच्चों के साहित्य पर शोध करने, देशभर के शोधार्थियों को इंदौर आमंत्रित कर उन्हें निःशुल्क साहित्य उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाकर सफलता पाई।

-डॉ. केके पांडे,
संयुक्त संचालक शिक्षा इंदौर